विस्तृत सन्दर्भ

१

नन्दिसंघ की प्राकृत पट्टावली

(The Indian Antiquary, vol. XX, pp. 344-347)

Introduction of Paṭṭāvalī A

११०॥ अथ पट्टावली लिख्यते॥

श्रीत्रैलोक्याधिपं नत्वा स्मृत्वा सद्गुरुभारतीं।
वक्ष्ये पट्टावलीं रम्यां मूलसङ्घगणाधिपं॥ १॥
श्रीमूलसङ्घप्रवरे नन्द्याम्नाये मनोहरे।
बलात्कारगणोत्तंसे गच्छे सारस्वतीयके॥ २॥
कुन्दकुन्दान्वये श्रेष्ठं उत्पन्नं श्रीगणाधिपं।
स एवात्र प्रवक्ष्यति श्रूयतां सज्जनाः जनाः॥ ३॥

(1) अथ वंशाधिकार प्रथम पट्टावली विषै युगादि चौदा कुलकर हूवा॥ १४ नाम छै॥ तैठी पाछै युग ल्या धर्मनिवारक संसारतारक आदिनाथ जी १ इति २४ वीर अन्तिम हूवा॥ तैठा वर्ष ६२ ताई केवली रह्ये॥ गाथा॥

अन्तिमजिणणिव्वाणे केवलणाणी य गोयममुणीन्दो।
बारह वासे य गये सुधम्मसामी य संजादो॥ १॥
तह बारह वासे पुण संजादो जम्बुसामि मुणिरायो।
अठतीस वास रहियो केवलणाणी य उक्किट्ठो॥ २॥
बासठि केवलवासे तिण्ह मुणि गोयमसुधम्मजम्बू अ।
बारह बारह दो जण तिय दुगहीणं च चालीसं॥ ३॥

(2) और पाछै गोतम स्वामी वर्ष १२ केवली रह्यो। तैठा पाछै जम्बू स्वामी ३८ केवली रह्यो। एवं वर्ष ६२ मै केवली रह्या॥ तठै पाछै ५ श्रुतकेवली लिखिते॥ गाथा॥

सुयकेवलि पञ्च जणा बासठि वासे गये सु संजादा।
पढमं चउदह वासं विण्हुकुमारं मुणेयव्वं॥ ४॥
नँदिमित्त वास सोलह तीय अपराजिय वास बावीसं।
इगहीण-वीस वासं गोवद्धण भद्दबाहु गुणतीसं॥ ५॥

फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

सद सुयकेवलणाणी पञ्च जणा विण्हु नन्दिमित्तो य।
अपराजिय गोवड्ढण (तह) भद्दबाहु य संजादा॥ ६॥

वर्ष १०० मै ए पाँच श्रुतकेवली हुवा विष्णुनन्दि १४ नन्दिमित्र १६ वर्ष अपराजित वर्ष २२ गोवरधन (sic) वर्ष १९ भद्रबाहुजी वर्ष २९॥ ए पाँच आचार्य श्रुतकेवली वर्ष १०० मै हूवा॥

(3) तैठा पाछैय्या नैँ ग्यारा अङ्ग चौदा पूर्व को पाठ कण्ठि आवैतो अर पुस्तक न छाजै॥ द्वादशाङ्ग का पद एक सो बारा कोडि तियासी लाख अठावन हजार पाँच पद छै ११२८३५८०००॥ ५॥

एक पद का श्लोक बतीस अक्षऱ्या एता होय। इक्यावन कोडि आठ लाख चोरासी हजार छ सै साट अकवीस ५१०८८४६२१ श्लोक हुवा।

सो बारा अङ्ग ने लिखताँ स्याही पैतीस हजार नो सै अठ्याणवे कोडिमण अर तेतीस लाखमण एक सो साटा अठाईसमण टङ्क सवा लागै ३५९९८३३००१२८ टङ्क॥

सहस्र श्लोक लिखताँ पइसा १ भरी स्याही लागै। तै कौ लिखै तोल चालीस की एती लागै॥

(4) तैठा पाछै महावीर स्युँ वरष १६२ पाछै दसपूर्वधारी हुवा ११ मुनि [॥ गाथा॥]

सद-बासट्ठि सु वासे गये सु उप्पण्ण दह सु पुव्वधरा।
सद तिरासि वासाणि य एगादह मुणिवरा जादा॥ ७॥
आयरिय विसाख पोट्ठल खत्तिय जयसेण नागसेण मुणी।
सिद्धत्थ धित्ति-विजयं बुहिलिङ्ग-देव-धमसेणं॥ ८॥
दह उगणीस य सत्तर इकवीस अठारह सत्तर।
अठारह तेरह वीस चउदह चोदय कमे णेयं॥ ९॥

श्री वीरात् वर्ष १६२ विशाखाचार्य वर्ष १०। श्रीवीरात् वर्ष १७२ प्रोष्ठिलाचार्य वर्ष १९। श्रीवीरात् वर्ष १९१ क्षत्रियाचार्य वर्ष १७। श्रीवीरात् वर्ष २०८ जयसेनाचार्य वर्ष २१। श्रीवीरात् वर्ष २२९ नागसेनाचार्य वर्ष १८। श्रीवीरात् वर्ष २४७ सिद्धार्थाचार्य वर्ष १७। श्रीवीरात् वर्ष २६४ धृतिसेनाचार्य वर्ष १८। श्रीवीरात् वर्ष २८२ विजयाचार्य वर्ष १३। श्रीवीरात् वर्ष २९५ बुद्धिलिङ्गाचार्य वर्ष २०। श्रीवीरात् वर्ष ३१५ देवाचार्य वर्ष १४। श्रीवीरात् वर्ष ३२९ धर्मसेनाचार्य॥ वर्ष १८३ पर्यन्त दशपूर्व का धारी हुवा। १८३ वर्ष एक सो तियासी मै।

(5) सो दश पूर्व के लिखवै स्याही तोल चालीस के, ग्यारा हजार एक सौ पैसठि कोडिमण अर दोय लाखमण अठावन हजारमण तीनि सै तिराणवैमण सेर पटरा लागै॥

सो यो एतो पाठयाँ ११ आचार्या नै कण्ठ आवैतो अर पुस्तक न छाँ॥

(6) इह स्थिति पाछै एकादशाङ्गधारी उपना वर्ष २२०॥ तिह मै वर्ष १२३ ताँई तौ एकादशाङ्ग पाट ५ हुवा॥ गाथा॥

अन्तिमजिणणिव्वाणे तियसय-पणचाल वास जादे सु।
एगादहङ्गधारिय पञ्च जणा मुणिवरा जादा॥ १०॥
नक्खत्तो जयपालग-पण्डव-धुवसेण-कंस-आयरिया।
अठारह वीस वासं गुणचालं चोद बत्तीसं॥ ११॥
सद तेवीस य वासे एगादह अङ्गधर जादा॥

श्री वीरात् वर्ष ३४५ नक्षत्राचार्य वर्ष १८। श्रीवीरात् वर्ष ३६३ जयपालाचार्य वर्ष २०। श्रीवीरात् वर्ष ३८३ पाण्डवाचार्य वर्ष ३९। श्रीवीरात् वर्ष ४२२ ध्रुवसेनाचार्य वर्ष १४। श्रीवीरात् वर्ष ४३६ कंसाचार्य वर्ष ३२॥

(7) वर्ष १२३ पाछै वर्ष ९७ मै दशाङ्गधारी उतरा। १२३ ता उतरता हुवा पाट ४॥ गाथा॥

वासं सत्ताणवदि (य) दसङ्ग नव अट्ठ अङ्गधरा॥ १२॥
सुभद्दं च जसोभद्दं भद्दबाहु कमेण य।
लोहाचज्ज मुणीसं च कहियं च जिणागमे॥ १३॥
छह अट्ठारह वासे तेवीस बावण वास मुणिणाहं।
दस-नव अट्ठङ्गधरा वास दुसद वीस सव्वेसु॥ १४॥

वर्ष ९७ मै पाट ४ हुवा॥ श्रीवीरात् वर्ष ४६८ सुभद्राचार्य वर्ष ६। श्रीवीरात् वर्ष ४७४ यशोभद्राचार्य वर्ष १८ श्रीवीरात् वर्ष ४९२ भद्रवाहु जी वर्ष २३॥ श्रीवीरात् वर्ष ५१५। लोहाचार्य जी वर्ष ५०॥ एव वर्ष ९७॥ अङ्ग घटता घटता रह्या वर्ष २२० ताँइँ॥

(8) ग्यारा अङ्ग कै लिखवै स्याही तो गैतै को व्योरो एक हजार दोय सै एक्यासी कोडिमण अर छ लाख गुणचास हजार छै सै चोसठिमण पावडो टङ्क। सवा लागै तोल चालीस कै १२८१०६४९६६४ टङ्क पाव १॥ एतो पाठय्याँ आचार्या नै कण्ठि आवतो अर पुस्तक न छा॥

(9) तैठाँ पाछै वर्ष ११८ ताँई एकाङ्गधारी रह्या॥ [गाथा॥]

पञ्च सए पण्णसठे अन्तिमजिणसमय जादे सु।
उप्पण्णा पञ्च जणा इयङ्गधारी मुणेयव्वा॥ १५॥
अहिवल्लि माघणन्दि य धरसेणं पुप्फयन्त भूदवली।
अडवीसे इगवीसं उगणीसं तीस वीस वास पुणो॥ १६॥

(10) एकाङ्गधारी ५ पाँच पाट हुवा॥ श्रीवीरात् ५६५ अहिव्हिलाचार्य वर्ष २८॥ श्रीवीरात् ५९३ माघनन्द्याचार्य वर्ष २१। श्रीवीरात् वर्ष ६१४ धरसेनाचार्य वर्ष १९ श्रीवीरात् वर्ष ६३३ पुष्पदन्ताचार्य वर्ष ३० श्रीवीरात् वर्ष ६६३ भूतवल्यिचार्य वर्ष २०॥ ११८ वर्ष॥ वर्ष ११८ ताँई एकाङ्गधारी घटता घटता श्रुतिग्यानी हुवा॥ महावीर स्युँ ६८३ वर्ष ताँई अङ्ग की स्थिति रही॥ पाछै श्रुतिज्ञानी हुवा॥ गाथा॥

इगसय अठार वासे इयङ्गधारी य मुणिवरा जादा।
छ सय तिरासि य वासे णिव्वाणा अङ्गछित्ति कहिय जिणं॥ १७॥

एक अङ्ग का पाठी हुवा वरस एक सो अठारा मै॥ एक अङ्क का पद अठारा हजार ल्या नै लिखताँ स्याही तोल चालीस कै मण। ५७००४७४५२ सतावन कोडि सैतालीस हजार च्यारि सै बावनमण टङ्क लालैँ॥

एते पाठया आचार्या नै कण्ठि आवतो अर पुस्तक न छा॥

(11) तैठा पाछै अवै श्रीमूलसङ्घ का पाट वर्णन कीजे छै। श्रीमहावीर स्युँ वर्ष ६८३ पाछै॥ विक्रमादित्य को जन्म हुवौ। सुभद्राचार्य स्युँ वर्ष २ विक्रम जन्म अर राज्य विक्रम की स्युँ वर्ष ४ भद्रबाहु जी पाटि बैठा॥ भद्रबाहु शिष्य गुप्तिगुप्त। तस्य नामत्रयं। गुप्तिगुप्त १ अर्हद्बलि २ विशाखाचार्य ३॥ तस्य चत्वारि शिष्य। नन्दिवृक्षमूलेन वर्षायोगो धृतः सह माघनिन्द तेन नन्दिसङ्घ स्थापितः। १॥ जिनसेननामतृणतले वर्षायोगो धृतः सह (सः) वृषभ तेन वृषभसङ्घ स्थापितः। २॥ येन सिंहगुहायां वर्षायोग स्थापितः सह (सः) सिंहसङ्घं स्थापितवान्। ३॥ यो देवदत्ता वेश्यागृहे वर्षायोगो स्थापितवान् सह (सः) देवसङ्घंश्चकार। ४॥

(12) तद्यथा॥ नन्दिसङ्घे पारिजातगच्छे बलात्कारगणे चत्वारि मुनिनामानि। नन्दि। १। चन्द्र। २। कीर्ति। ३। भूषण। ४। पुनरपि नन्दिसंङ्घे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे। तथा च श्रीमूलसङ्घे नन्द्यामान्ये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे चत्वारि मुनिनामानि। नन्दि। १। चन्द्र। २। कीर्ति। ३। भूषण। ४। इत्यादि॥

(13) तत्र प्रथमं वीरात् वर्ष ४९२ सुभद्राचार्यात् वर्ष २४ विक्रमजन्मान्त वर्ष २२ राज्यान्त वर्ष ४ भद्रबाहु जातः॥ गाथा॥

सत्तरि चदुसदजुत्तो तिण काला विक्कमो हवइ जम्मो।
अठ वरस वाललीला सोडस वासेहि भम्मिए देस॥ १८॥
पणरसवासे जज्जं कुणंति मिच्छोवदेससंजुत्तो।
चालीसवरस जिणवरधम्मं पालीय सुरपयं लहियं॥ १९॥

सो याँ आचार्या बुद्धि घटती जाणी। क्यौँ! जत्काल का दोष सेती॥ तदि भूतवलि मुनि पुष्पदन्त मुनि श्रुतज्ञान सर्व पुस्तका में थाप्यो॥ मिति जेष्ठ सुदि पञ्चमी के दिन॥

✧✧✧

२

प्रो० हार्नले द्वारा सम्पादित नन्दिसंघ की तालिकाबद्ध पट्टावली का शेष अंश

क्र. 27 से क्र. 108 तक

(The Indian Antiquary, vol. XX, pp. 352-355)

TABLES OF THE KUNDAKUNDA LINE, OR THE SARASVATĪ GACHCHHA, CALLED THE NANDI ĀMNĀYA, OR BALĀTKĀRA GAṆA, OF THE MŪLA SAṄGHA. (FROM MSS. A AND B.)

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
27.	Mahākīrti	686 Mr. S. 4	629	6	–	–	12	–	–	17	11	5	15	35	11	20	He was made pontiff in Bhaddalpur, but transferred his seat to Ujaini.
28.	Vishṇunandin	704 Mr. V. 9	647	7	–	–	14	–	–	21	4	–	15	42	4	15	(MS. B calls him Vīranandin.)
29.	Śribhūshaṇa I	726 Ch. S. 9	669	14	–	–	8	–	–	9	–	–	26	31	–	26	
30.	Śrīchandra	735 V. S. 5	678	6	–	–	12	–	–	14	3	4	31	32	4	5	(P. 12, Śīlachandra.)
31.	Nandikīrti	749 Bh. S. 10	692	15	–	–	20	–	–	15	6	4	13	50	6	17	(P. 12, Śrīnandin.)

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
32.	Dēśabhūshaṇa	765 Ch. V. 12	708	18	–	–	24	–	–	–	6	6	7	42	6	13	(MS. B gives Saṁ. 764.)
33.	Anantakīrti	765 Ā S. 10	708	11	–	–	13	–	–	19	9	25	5	43	10	–	
34.	Dharmanandin	785 Ś. S. 15	728	13	–	–	18	–	–	22	9	25	5	53	10	–	(P. 12, Dharmādinandin.)
35.	Vīrachandra	808 J. S. 15	751	13	–	–	25	–	–	32	–	4	8	70	–	12	(P. 13, Vidyānandin.)
36.	Rāmachandra	840 As. V. 12	783	8	–	–	11	–	–	16	10	–	6	35	10	6	(MS. B calls him also Vīrachandra.)
37.	Rāmakīrti	857 V. S. 3	800	14	–	–	16	–	–	21	4	26	11	51	5	7	
38.	Abhayachandra	878 Ā. S. 10	821	18	–	–	10	–	–	17	–	27	4	45	1	1	(P. 13, Abhayēndu.)
39.	Naranandin	(897) K. S. 7	840	15	–	–	21	–	–	18	9	–	9	54	9	9	(MS. B and P. 13 call him Narachandra; MS. B has K.S. 11; it also gives Saṁ. 895.)

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
40.	Nāgachandra	916 Bh. V. 5	859	21	–	–	13	–	–	23	–	3	10	57	–	18	
41.	Nayananandin	939 Bh. S. 9	882	8	–	–	10	–	–	8	9	11	9	26	9	20	(MS. B gives Bh. S. 3. P. 14 has Nayanandin.)
42.	Harichandra	948 As. V. 8	891	8	4	–	14	8	–	26	1	8	8	49	1	16	
43.	Mahīchandra I	974 Ś. S. 9	917	14	–	–	10	11	–	16	6	–	5	41	5	5	(MS. B gives Saṁ 972 and consequently deducts 2 from each date down to No. 52, where it also gives 1140.)
44.	Māghachandra I	990 M. S. 14	933	13	–	–	20	–	–	32	2	24	9	65	3	3	(P. 14 has Māghavēndu.)
45.	Lakshmīchandra	1023 J. V. 2	966	11	–	–	25	–	–	14	4	3	11	50	4	14	
46.	Guṇanandin II	1037 Ā. S. 1	980	18	–	–	20	–	–	10	10	29	14	48	11	13	(MS. B adds marginally Gunakīrti, which is also given by P. 14.)
47.	Guṇachandra	1048 Bh. S. 14	991	10	–	–	22	–	–	17	8	7	10	49	8	17	(P. 15 inserts Vāsavēndu between Nos. 47 & 48.)
48.	Lōkachandra II	1066 J. S. 1	1009	15	–	–	30	–	–	13	3	3	4	58	3	7	

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
49.	Śrutakīrti	1079 Bh. S. 8	1022	13	–	–	32	–	–	15	6	6	6	60	6	12	
50.	Bhāvachandra	1094 Ch. V. 5	1037	12	–	–	25	–	–	20	11	25	5	58	–	–	
51.	Mahīchandra II	1115 Ch. V. 5	1058	10	–	–	26	–	–	25	5	10	5	61	5	15	Down to here the seat of the Pontificate was in Ujain. (P. 16 has Mahāchandra.)
52.	Māghachandra II	1140 Bh. S. 5	1083	14	–	–	13	–	–	4	3	17	7	31	3	24	He pontificated in Wārā. (See remark under No. 44.)
53.	Vṛishabhanandin	1144 P. V. 14	1087	7	–	–	37	–	–	3	4	1	4	47	4	5	In wārā. (P. 16 has Brahmanandin.)
54.	Śivanandin	1148 V. S. 4	1091	9	–	–	39	–	–	7	6	17	14	55	7	1	In Wārā.
55.	Vasuchandra	1155 Mr. S. 5	1098	11	–	–	40	–	–	–	7	28	3	51	8	1	In Wārā. (P. 16 has viśvachandra.)
56.	Saṅghanandin	1156 Ś. S. 6	1099	7	–	–	32	–	–	4	–	24	5	43	–	29	In wārā. (MS B calls him Sishanandin, P. 17, Harinandin.)

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
57.	Bhāvanandin	1160 Bh. S. 5	1103	11	–	–	30	–	–	7	2	–	3	48	2	3	In Wārā.
58.	Dēvanandin II	1167 K. S. 8	1110	11	–	–	30	–	–	3	3	2	10	44	3	12	In Wārā. (P. 17, Surakīrti.)
59.	Vidyāchandra	1170 Ph. V. 5	1113	14	–	–	38	–	–	5	5	5	14	57	5	19	In Wārā.
60.	Śūrachandra	1176 Ś. S. 9	1119	10	–	–	35	–	–	8	1	29	2	53	2	1	In Wārā.
61.	Māghanandin II	1184 Ā. S. 10	1127	14	3	–	32	2	–	4	1	16	5	50	6	21	In Wārā.
62.	Jñānakīrti	1188 Mr. S. 1	1131	10	–	–	34	–	–	11	–	3	7	55	–	10	In Wārā. (P. 18, Jñānānandin.)
63.	Gaṅgākīrti	1199 Mr. S. 11	1142	13	–	–	33	–	–	7	2	8	10	53	2	18	Down to here the pontificates took place in Wārā. (MS. B adds "from here 14 pontificates took place in Gwālēr, down to Abhayakīrti, No.77 ").

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
64.	Siṁhakīrti	1206 Ph. V. 14	1149	8	–	–	37	–	–	2	2	15	16	47	3	1	In Gwālēr (Gwāliyar).
65.	Hēmakīrti	1209 J. V. 3	1152	13	–	–	24	–	–	7	3	[27	6	44	4	3	(From the middle of No. 65 MS. A breaks off down to the middle of No. 79. The lacuna is supplied from MS. B.)
66.	Sundarakīrti	1216 Ā. S. 3	1159	6	9	–	19	3	–	6	6	20	10	32	7	–	(P. 18, has Chārunandin.)
67.	Nēmīchandra II	1223 V. S. 3	1166	7	–	–	21	–	–	7	8	29	9	35	9	8	(P. 19 has Nēminandin.)
68.	Nābhikīrti	1230 M. S. 11	1173	5	–	–	35	–	–	1	11	26	4	42	–	–	
69.	Narēndrakīrti I	1232 M. S. 11	1175	14	–	–	13	–	–	9	–	18	12	36	1	–	(P. 19, Narēndrādiyaśah.)
70.	Śrīchandra II	1241 Ph. S. 11	1184	7	–	–	25	–	–	6	3	24	7	38	4	1	
71.	Padmakīrti	1248 A. S. 12	1191	10	–	–	22	–	–	4	11	25	6	37	–	1	

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
72.	Varaddhachandra	1253 A. S. 13	1196	18	–	–	5	–	–	2	11	28	3	26	–	1	(Perhaps wrong for Varddhamana, as given by P. 19).
73.	Akalaṅkachandra	1256 A. S. 14	1199	14	–	–	33	–	–	1	3	24	7	48	4	1	
74.	Lalitakīrti	1257 K. S. 15	1200	13	–	–	24	–	–	4	–	–	5	41	–	5	
75.	Kēśavachandra	1261 Mr. V. 5	1204	11	–	–	34	–	–	–	6	15	6	45	6	21	
76.	Chārukīrti	1262 J. S. 11	1205	13	–	–	32	–	–	2	3	2	7	47	3	9	
77.	Abhayakīrti	1264 Ā. V. 3	1207	11	2	–	30	5	–	–	4	11	7	41	11	18	In Gwālēr (Gwāliyar.)
78.	Vasantakīrti.	1264 M. S. 5	1207	12	–	–	20	–	–	1	4	22	8	33	5	–	In Ajmēr.
79.	Prakshātakīrti	1266 As. S. 5	1209	11	–	–	15	–	–	2	3	19	4	28	3	23	In Ajmēr. (Perhaps wrong for Prakhyātakīrti, as in P. 22.)

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
80.	Śāntikīrti II	1268 K. V. 8	1211	18	–	–	23	–	–	2	9	7	8	43	9	15	In Ajmēr. (P. 23, Viśālakīrti.)
81.	Dharmachandra I	1271 Ś. S. 15	1214	16	–	–	24	–	–	25	–	5	8	65	–	13	In Ajmēr.
82.	Ratnakīrti II	1296 Bh. V. 13	1239	19	–	–	25	–	–	14	4	10	6	58	4	16	In Ajmēr.
83.	Prabhāchandra II	1310 P. S. 14	1253	12	–	–	12	–	–	74	11	15	8	98	11	23	In Ajmēr. There was an Āchārya of Prabhāchandra in Gujarāt. A certain Śrāvak called Prabhāchandra for the purpose of performing a consecration, but he could not come. Then after giving the Sūrimantra to the Āchārya, the Śrāvak conferred on him the title of Bhaṭṭāraka. Thus Padmanandin became a Bhaṭṭāraka. (MS. B adds the date Saṁ .1375=A. D. 1318.) He carved a stone figure of Sarasvatī and caused it to speak (see p. 41.)

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
84.	Padmanandin	1385 P. S. 7	1328	10	7	–	23	5	–	65	–	18	10	99	–	28	In Dillī (Delhi.)
85.	áubhachandra	1450 M. S. 5	1393	16	–	–	24	–	–	56	3	4	11	96	3	15	In Dillī.
86.	Prabhāchandra III	1507 J. V. 5	1440	12	–	–	15	–	–	64	8	17	10	91	8	27	In Dillī. (MS. B and P. 30 call him Jina chandra, and the next, Prabhāchandra.)
87.	Jinachandra II	1571 Ph. V. 2	1514	15	–	–	35	–	–	9	4	25	8	59	5	3	In Chitōṛ. In Saṁ. 1572 the Gachchha split up into two, one section residing in Chitōṛ, the other in Nāgōr.[64]

* 64. This date is obscure, the seperation may have taken place in that year (1572), but Seperate heads were not appointed till 1581, when Jinachandra died.

A. – The Nāgōr Line. From MS. A.

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
88.	Ratnakīrti III	1581 Ś.V. 5	1524	9	–	–	31	–	–	21	8 (5 Only)	13	5	61	8	18	(All these particulars, exc. date of accession, really belong to No. 88 of the Chitōē line, q.v. Ratnakīrti reigned only about 5 years.)
89.	Bhuvanakīrti I	1586 M. V. 3	1529	11	–	–	26	–	–	4	9	26	2-4	42	0	0	He was by caste a Chhāvaḍā (Intercalary 2 months 4 days.)
90.	Dharmakīrti	1590 Ch. V. 7	1533	13	–	–	31	–	–	10	(10)	(20)	1-10	55	(1)	(4)	By caste a Sēṭhī. (Intercalary, 1 month 10 days.)
91.	Viśālakīrti	1601 V. S. 1	1544	9	–	–	58	–	–	–	–	–	–	–	–		(From the middle of No. 91 the MS. again breaks off down to the beginning of No. 105.)
105.	Bhuvanabhūshaṇa	1797 A. S. 10	1740	11	–	–	[25	1	2]	4	6	12	4-16	41	0	0	By caste a chhāvaḍā, in Kālaiḍahar. (Intercalary 4 months 16 days; the period of monkhood is missing in the MS.)
106.	Vijayakirti	1802 A. S. 1	1745	9	–	–	28	–	–	27	7	0	?	?	?	?	By cast a Pāṭaṇī, in Ajmēr. (The intercalary and total periods are missing.)
107.	Lōkēndrakirti	1830 K. ?	1773	7	–	–	28	–	–	10	0	0	mts. 8	?	?	?	Of a high caste (Vaḍjātyā). His seat of pontificate was in Ajmēr. His death (śānti) took place in Malakāpur in Vaiśākha Sudi 5.
108.	Bhuvanakīrti II	1840 Ch. V. 1	1783	12	–	–	27	–	–	–	–	–	–	–	–	–	He is the present pontiff.

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
84.	Padmanandin	1385 P. S. 7	1328	10	7	–	23	5	–	65	–	18	10	99	–	28	In Dillī (Delhi.)
85.	áubhachandra	1450 M. S. 5	1393	16	–	–	24	–	–	56	3	4	11	96	3	15	In Dillī.
86.	Prabhāchandra III	1507 J. V. 5	1440	12	–	–	15	–	–	64	8	17	10	91	8	27	In Dillī. (MS. B and P. 30 call him Jina chandra, and the next, Prabhāchandra.)
87.	Jinachandra II	1571 Ph. V. 2	1514	15	–	–	35	–	–	9	4	25	8	59	5	3	In Chitōṛ. In Saṁ. 1572 the Gachchha split up into two, one section residing in Chitōṛ, the other in Nāgōr.[64]

* 64. This date is obscure, the seperation may have taken place in that year (1572), but Seperate heads were not appointed till 1581, when Jinachandra died.

A. – The Nāgōr Line. From MS. A.

Serial Number	Names	Dates of Accession		House-holder			Monk			Pontiff			Intercalary days	Total			REMARKS
		Saṁvat	A.D.	Years	Months	Days	Years	Months	Days	Years	Months	Days		Years	Months	Days	
88.	Ratnakīrti III	1581 Ś.V. 5	1524	9	–	–	31	–	–	21	8 (5 Only)	13	5	61	8	18	(All these particulars, exc. date of accession, really belong to No. 88 of the Chitōē line, q.v. Ratnakīrti reigned only about 5 years.)
89.	Bhuvanakīrti I	1586 M. V. 3	1529	11	–	–	26	–	–	4	9	26	2-4	42	0	0	He was by caste a Chhāvaḍā (Intercalary 2 months 4 days.)
90.	Dharmakīrti	1590 Ch. V. 7	1533	13	–	–	31	–	–	10	(10)	(20)	1-10	55	(1)	(4)	By caste a Sēṭhī. (Intercalary, 1 month 10 days.)
91.	Viśālakīrti	1601 V. S. 1	1544	9	–	–	58	–	–	–	–	–	–	–	–		(From the middle of No. 91 the MS. again breaks off down to the beginning of No. 105.)
105.	Bhuvanabhūshaṇa	1797 A. S. 10	1740	11	–	–	[25	1	2]	4	6	12	4-16	41	0	0	By caste a chhāvaḍā, in Kālaiḍahar. (Intercalary 4 months 16 days; the period of monkhood is missing in the MS.)
106.	Vijayakirti	1802 A. S. 1	1745	9	–	–	28	–	–	27	7	0	?	?	?	?	By cast a Pāṭaṇī, in Ajmēr. (The intercalary and total periods are missing.)
107.	Lōkēndrakirti	1830 K. ?	1773	7	–	–	28	–	–	10	0	0	mts. 8	?	?	?	Of a high caste (Vaḍjātyā). His seat of pontificate was in Ajmēr. His death (śānti) took place in Malakāpur in Vaiśākha Sudi 5.
108.	Bhuvanakīrti II	1840 Ch. V. 1	1783	12	–	–	27	–	–	–	–	–	–	–	–	–	He is the present pontiff.

B. – The Chitōr Line. From MS. B.

Serial Number	Names	Dates of Accession		REMARKS	Serial Number	Names	Dates of Accession		REMARKS
		Saṁ.	A.D.				Saṁ.	A.D.	
88.	Dharmachandra II	1581 S.V.5	1524	He reigned 21 years, see remark to No. 88 of the Nāgōr Line. P. 35 omits him.	96	Mahēndrakīrti I	1792 P.S.10	1735	
					97	Khēmēndrakīrti	1815 A.S.11	1758	
					98	Surēndrakīrti	1822 V.V.?	1765	
89	Lalitakīrti II	1603 Ch.S.8	1546	(P. 35 omits him.)	99	Sukhēndrakīrti	1852 ??	1795	He was a house holder for 4 years, (i.e., he was 4 year old when he took the vows.)
90	Chandrakīrti	1622 V.V.?	1565						
91	Dēvēndrakīrti	1662 Ph.V.?	1605						
92	Narēndrakīrti	1691 K.V.8	1634	(P.pattavali closes here.)	100	Nainakīrti	1879 A.V.10	1822	
93	Surēndrakīrti	1722 S.V.8	1665		101	Dēvēndrakīrti III	1883 Ā.S.10	1826	
94	Jagatkīrti	1733 S.V.5	1676		102	Mahēndrakīrti II	1938 Ph.S.2	1881	
95	Dēvēndrakīrti II.	1770 M.V.11	1713						

३

प्रथम शुभचन्द्रकृत नन्दिसंघ की गुर्वावली (वि० सं० १५३५-१६२०)

श्रीमानशेषनरनायक-वन्दिताङ्घ्रीः **श्रीगुप्तिगुप्त** इति विश्रुतनामधेयः।
यो **भद्रबाहु**मुनिपुंगव-पट्टपद्मः सूर्य्यः स वो दिशतु निर्म्मलसंघवृद्धिम्॥ १॥

श्रीमूलसंघेऽजनि नन्दिसंघस्तस्मिन् बलात्कारगणोऽतिरम्यः।
तत्राभवत्पूर्वपदांशवेदी **श्रीमाघनन्दी** नरदेववन्द्यः॥ २॥

पट्टे तदीये मुनिमान्यवृत्तो **जिनादिचन्द्र**स्समभूदतन्त्रः।
ततोऽभवत्पञ्चसुनामधाम श्रीपद्मनन्दी मुनिचक्रवर्ती॥ ३॥

आचार्य्यः **कुन्दकुन्दाख्यो** वक्रग्रीवो महामुनिः।
एलाचार्य्यो गृद्धपिच्छः पद्मनन्दीति तन्नुतिः॥ ४॥

तत्त्वार्थसूत्र-कर्तृत्व-प्रकटीकृत-सन्मनाः।
उमास्वातिपदाचार्यो मिथ्यात्वतिमिरांशुमान्॥ ५॥

लोहाचार्यस्ततो जातो जातरूपधरोऽमरैः।
सेवनीयः समस्ताऽर्थविबोधनविशारदः॥ ६॥

ततः पट्टद्वयी जाता प्राच्युदीच्युपलक्षणात्।
तेषां यतीश्वराणां स्युर्नामानीमानि तत्त्वतः॥ ७॥

यशःकीर्तिर्यशोनन्दी देवनन्दी महामतिः।
पूज्यपादः पराख्येयो **गुणनन्दी** गुणाकरः॥ ८॥

वज्रनन्दी वज्रवृत्तिस्तार्किकाणां महेश्वरः।
कुमारनन्दी लोकेन्दुः प्रभाचन्द्रो वचोनिधिः॥ ९॥

नेमिचन्द्रो भानुनन्दी सिंहनन्दी जटाधरः।
वसुनन्दी वीरनन्दी रत्ननन्दी रतीशमित्॥ १०॥

माणिक्यनन्दी मेघेन्दुः शान्तिकीर्तिर्महायशाः।
मेरुकीर्तिर्महाकीर्तिर्विश्वनन्दी विदाम्बरः॥ ११॥

श्रीभूषणः शीलचन्द्रः श्रीनन्दी देशभूषणः।
अनन्तकीर्तिर्धर्मादिनन्दी नन्दीति शासनः॥ १२॥

विद्यानन्दी रामचन्द्रो रामकीर्ति रनिन्दद्यावाक्।
अभयेन्दुर्नरचन्द्रो नागचन्द्रः स्थिरव्रतः॥ १३॥

B. – The Chitōr Line. From MS. B.

Serial Number	Names	Dates of Accession Sam̐.	Dates of Accession A.D.	REMARKS	Serial Number	Names	Dates of Accession Sam̐.	Dates of Accession A.D.	REMARKS
88.	Dharmachandra II	1581 S.V.5	1524	He reigned 21 years, see remark to No. 88 of the Nāgōr Line. P. 35 omits him.	96	Mahēndrakīrti I	1792 P.S.10	1735	
89	Lalitakīrti II	1603 Ch.S.8	1546	(P. 35 omits him.)	97	Khēmēndrakīrti	1815 A.S.11	1758	
90	Chandrakīrti	1622 V.V.?	1565		98	Surēndrakīrti	1822 V.V.?	1765	
91	Dēvēndrakīrti	1662 Ph.V.?	1605		99	Sukhēndrakīrti	1852 ??	1795	He was a house holder for 4 years, (i.e., he was 4 year old when he took the vows.)
92	Narēndrakīrti	1691 K.V.8	1634	(P.pattavali closes here.)	100	Nainakīrti	1879 A.V.10	1822	
93	Surēndrakīrti	1722 S.V.8	1665		101	Dēvēndrakīrti III	1883 Ā.S.10	1826	
94	Jagatkīrti	1733 S.V.5	1676		102	Mahēndrakīrti II	1938 Ph.S.2	1881	
95	Dēvēndrakīrti II.	1770 M.V.11	1713						

३

प्रथम शुभचन्द्रकृत नन्दिसंघ की गुर्वावली (वि० सं० १५३५-१६२०)

श्रीमानशेषनरनायक-वन्दिताङ्घ्रीः **श्रीगुप्तिगुप्त** इति विश्रुतनामधेयः।
यो **भद्रबाहु**मुनिपुंगव-पट्टपद्मः सूर्य्यः स वो दिशतु निर्म्मलसंघवृद्धिम्॥ १॥

श्रीमूलसंघेऽजनि नन्दिसंघस्तस्मिन् बलात्कारगणोऽतिरम्यः।
तत्राभवत्पूर्वपदांशवेदी **श्रीमाघनन्दी** नरदेववन्द्यः॥ २॥

पट्टे त्तदीये मुनिमान्यवृत्तो **जिनादिचन्द्र**स्समभूदतन्त्रः।
ततोऽभवत्पञ्चसुनामधाम श्रीपद्मनन्दी मुनिचक्रवर्ती॥ ३॥

आचार्य्यः **कुन्दकुन्दाख्यो** वक्रग्रीवो महामुनिः।
एलाचार्य्यो गृद्धपिच्छः पद्मनन्दीति तन्नुतिः॥ ४॥

तत्त्वार्थसूत्र-कर्तृत्व-प्रकटीकृत-सन्मनाः।
उमास्वातिपदाचार्यो मिथ्यात्वतिमिरांशुमान्॥ ५॥

लोहाचार्यस्ततो जातो जातरूपधरोऽमरैः।
सेवनीयः समस्ताऽर्थविबोधनविशारदः॥ ६॥

ततः पट्टद्वयी जाता प्राच्युदीच्युपलक्षणात्।
तेषां यतीश्वराणां स्युर्नामानीमानि तत्त्वतः॥ ७॥

यशःकीर्तिर्यशोनन्दी देवनन्दी महामतिः।
पूज्यपादः पराख्येयो **गुणनन्दी** गुणाकरः॥ ८॥

वज्रनन्दी वज्रवृत्तिस्तार्किकाणां महेश्वरः।
कुमारनन्दी लोकेन्दुः प्रभाचन्द्रो वचोनिधिः॥ ९॥

नेमिचन्द्रो भानुनन्दी सिंहनन्दी जटाधरः।
वसुनन्दी वीरनन्दी रत्ननन्दी रतीशमित्॥ १०॥

माणिक्यनन्दी मेघेन्दुः शान्तिकीर्तिर्महायशाः।
मेरुकीर्तिर्महाकीर्तिर्विश्वनन्दी विदाम्बरः॥ ११॥

श्रीभूषणः शीलचन्द्रः श्रीनन्दी देशभूषणः।
अनन्तकीर्तिर्धर्मादिनन्दी नन्दीति शासनः॥ १२॥

विद्यानन्दी रामचन्द्रो रामकीर्ति रनिन्दद्यावाक्।
अभयेन्दुर्नरचन्द्रो नागचन्द्रः स्थिरव्रतः॥ १३॥

नयनन्दी हरिश्चन्द्रो महीचन्द्रो मलोज्झितः।
माघवेन्दु र्लक्ष्मीचन्द्रो गुणकीर्तिर्गुणाश्रयः॥ १४॥

गुणचन्द्रो वासवेन्दुर्लोकचन्द्रः स्वतत्त्ववित्।
त्रैविद्यः **श्रुतकीर्त्याख्यो** वैयाकरणः भास्करः॥ १५॥

भानुचन्द्रो महाचन्द्रो माघचन्द्रः क्रियागुणीः।
ब्रह्मनन्दी शिवनन्दी विश्वचन्द्रस्तपोधनः॥ १६॥

सैद्धान्तिको **हरिनन्दी भावनन्दी** मुनीश्वरः।
सुरकीर्तिर्विद्याचन्द्रः सुरचन्द्रः श्रियां निधिः॥ १७॥

माघनन्दी ज्ञाननन्दी गङ्गनन्दी महत्तमः।
सिंहकीर्तिर्हेमकीर्तिश्चारुनन्दी मनोज्ञधीः॥ १८॥

नेमिनन्दी नाभिकीर्तिर्नरेन्द्रादियशः परम्।
श्रीचन्द्रः पद्मकीर्त्तिश्च वर्द्धमानो मुनीश्वरः॥ १९॥

अकलङ्कश्चन्द्रगुरुर्ललितकीर्तिरुत्तमः।
त्रैविद्यः केशवश्चन्द्रश्चारुकीर्तिः सुधार्मिकः॥ २०॥

सैद्धान्तिकोऽभयकीर्तिर्वनवासी महातपाः।
वसन्तकीर्तिर्व्याघ्राहिसेवितः शीलसागरः॥ २१॥

तस्य श्रीवनवासिनस्त्रिभुवन-**प्रख्यात-कीर्ते**रभूत्

शिष्योऽनेक-गुणालयः सम-यम-ध्यानापगा-सागरः।
वादीन्द्रः परवादि-वारण-गण-प्रागल्भ-विद्रावणः
सिंहः श्रीमतिमण्डयेति विदितस्त्रैविद्यविद्यास्पदम्॥ २२॥

विशालकीर्तिर्वरवृत्तमूर्त्तिस्तपोमहात्मा **शुभकीर्तिदेवः**।
एकान्तराद्युग्र-तपोविधानाद्धातेव सन्मार्गविधेर्विधाने॥ २३॥

श्रीधर्मचन्द्रोऽजनि तस्य पट्टे हमीरभूपालसमर्चनीयः।
सैद्धान्तिकः संयमसिन्धुचन्द्रः प्रख्यातमाहात्म्यकृतावतारः॥ २४॥

ततपट्टेऽजनि **रत्नकीर्ति**रनघः स्याद्वादविद्याम्बुधिः
नानादेशविवृत्तशिष्यनिवहः प्राच्यांघ्रियुग्मो गुरुः।
धर्माधर्म-कथा-सुरक्त-धिषणः पापप्रभा-बाधको
बालब्रह्म-तपःप्रभाव-महितः-कारुण्य-पूर्णाशयः॥ २५॥

अस्ति स्वस्तिसमस्तसङ्घतिलकः श्रीनन्दिसंघोऽतुलो
गच्छस्तत्र विशलकीर्त्तिकलितः सारस्वतीयः परः।
तत्र-श्रीशुभकीर्त्तिमहिमा व्याप्ताम्बरः सन्मतिः
जीयादिन्दुसमान-कीर्तिरमलः श्रीरत्न-कीर्तिर्गुरुः॥ २६॥

पट्टे श्रीरत्नकीर्तिरनुपमतपसः पूज्यपादीयशास्त्रः
व्याख्याविख्यातकीर्तिगुणगणनिधिपः सत्क्रियाचारुचंचुः।
श्रीमानानन्द-धाम-प्रतिबुध-नुतमामानसंदायिवादो
जीयादाचन्द्रतारं नरपतिविदितः **श्रीप्रभाचन्द्रदेवः**॥ २७॥

श्रीमत्प्रभाचन्द्रमुनीन्द्रपट्टे शश्वत्प्रतिष्ठाप्रतिभागरिष्ठः।
विशुद्धसिद्धान्तरहस्यरत्नरत्नाकरो नन्दतु **पद्मनन्दी**॥ २८॥

हंसो ज्ञान-मरालिका-समसमाश्लेष-प्रभूताद्भुता
नन्दं क्रीडति मानसेति विशदे यस्यानिशं सर्वतः।
स्याद्वादामृतसिन्धुवर्द्धनविधौ श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभाः
पट्टे सूरिमतमल्लिका स जयतात् श्रीपद्मनन्दी मुनिः॥ २९॥

महाव्रतपुरन्दरः प्रशमदग्धरागाङ्कुरः
स्फुरत्परमपौरुषः स्थितिरशेषशास्त्रार्थवित्।
यशोभर-मनोहरीकृत-समस्त-विश्वम्भरः
परोपकृतितत्परो जयति पद्मनन्दीश्वरः॥ ३०॥

पद्मनन्दिमुनीन्द्रेण वंशवाणी-वसुन्धरा।
सन्न्यासपदवीन्यास-पादन्यासैः पवित्रिता॥ ३१॥

श्रीपद्मनन्दि-पदपङ्कज-भानुरुद्धो
जय्यो जिताद्भुतमदो विदितार्थबोधः
ध्वस्तान्धकारनिकटो जयतान्महात्मा
भट्टारकः **सकलकीर्त्ति**रतिप्रसिद्धः॥ ३२॥

सुयति-**भुवनकीर्त्ति**स्तत्पदाब्जार्क-मूर्त्तिः
परमतपसि निष्ठः प्राप्तसर्वप्रतिष्ठः।
मुनिगणनुतपादो निर्जितानेकवादः
स्ववतु सकलसङ्घान् नाशिताऽनेकविघ्नान्॥ ३३॥

प्रोघग्ज्ञानकरस्तपोभरधरः सद्बोधतार्घो धुरो
नानान्यायवरो यतीश्वरवरो वादीन्द्रभूभृद्वरः।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2571851 मो. : 8989505108 e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

तत्पट्टोन्नतिकृन्निरस्तनिःकृतिः **श्रीज्ञानभूषो** यतिः
पायाद्वो निहताहितः परमसज्जैनावनीशैः स्तुतः॥ ३४॥

विजयकीर्त्तियतिर्जितमत्सरो विदितगौम्मटसारपरागमः।
जयति तत्पदभासितशासनो निखिलतार्किकतर्कविचारकः॥ ३५॥

यः पूज्यो नृपमल्लि-सैरव-महादेवेन्द्र-मुख्यैर्नृपैः
षट्तर्कागम-शास्त्र-कोविद-मतिश्रीमद्यशश्चन्द्रमाः।
भव्याम्भोरुहभास्करः शुभकरः संसारविच्छेदकः
सोऽव्याच्छ्रीविजयादिकीर्त्तिमुनिपो भट्टारकाधीश्वरः॥ ३६॥

तत्पट्ट-कैरव-विकाशन-पूर्णचन्द्रः
स्याद्वाद-भाषित-विबोधित-भूमिपेन्द्रः।
अव्याद्गुणान् **सुशुभचन्द्र** इति प्रसिद्धो
रम्यान् बहून् गुणवतो हि सुतत्त्वबोधः॥ ३७॥

जायीत् षट्तर्कचंचुप्रवणगुणनिधिस्तत्पदाम्भोजभृङ्गः
शुम्भद्वादीन-कुम्भोद्भट-विकट-सटाकुण्ठ-कण्ठीरवेन्दुः।
श्रीमत्सु सौभचन्द्रः स्फुटपटुविकटाटोप-वैकुण्ठसूनुः
हन्ता चिद्रूपवेत्ता विदित्तसकलसच्छास्त्रसारः कृपालुः॥ ३८॥

तत्पट्ट-चारुशतपत्र-विकाशनेन
पुण्यप्रवालघनवर्द्धनमेघतुल्यः।
व्याख्यामितावलिसुतोषित-भव्यलोको
भट्टारकः **सुमतिकीर्ति**रतिप्रबुद्धः ॥ ३९॥

ज्ञात्वा संसारभावं विहितवरतपो मोक्षलक्ष्मीसुकांक्षी
स्याद्वादी शान्तिमूर्तिर्मदनमदहरो विश्वतत्त्वैकवेत्ता।
सुज्ञानं दानमेतद्वित्तरति गुणनिधिर्मोहमातङ्गसिंहो
जीयाद्भट्टारकोऽसौ सकलयतिपतिः श्रीसुमत्यादिकीर्तिः॥ ४०॥

तत्पट्टतामरसरञ्जनभानुमूर्त्तिः
स्याद्वादवादकरणेन विशालकीर्त्तिः।
भाषासुधारससुपुष्टितभव्यवर्णो
भट्टारकः **सुगुणकीर्ति**गुरुर्गणार्च्यः॥ ४१॥

प्राज्ञो वादीभसिंहः सकलगुणनिधिर्ध्वस्तदोषः कृपालुः।
शान्तो मोक्षाभिकाङ्क्षी विशदतरमतिः कस्नकान्तिः कलावान्॥

क्षिप्ताशन्तर्कवेत्ता शुभतरवचनः सर्वलोकस्थितिज्ञः।
श्रीमानीषः कृतज्ञो जयति जगति सः श्रीगुणाद्यन्तकीर्तिः॥ ४२॥

तत्पट्ट-पङ्कज-विकाशनपद्मबन्धु-
र्जीयात्कुवादि-मुखकैरवपद्मबन्धुः।
कान्त्या क्षमा तिमिरनाशनपद्मबन्धुः
श्री**वादिभूषण**-गुरुर्जित-पद्मबन्धुः॥ ४३॥

यो नानागमशब्दतर्कनिपुणो जैनैर्नृपैः पूजितः
कर्णाटे कलिकालगौतमसमो भट्टारकाधीश्वरः।
हेयाहेयविचारबुद्धिकलितो रत्नत्रयालंकृतः
सः श्रीमान् शुभचन्द्रवद्धि श्रयते श्रीवादिभूष्यो गुरुः॥ ४४॥

तत्पट्टपुष्पंकर-भासन-मित्र-मूर्त्तिः
कुज्ञान-पङ्क-परिशोषण-मित्र-मूर्त्तिः।
निःशेष-भव्य-हृदयाम्बुजमित्रमूर्तिः
भट्टारको जगति भाति **सुरामकीर्तिः**॥ ४५॥

स्याद्वादन्यायवेदी हतकुमतिमदस्त्यक्तदोषो गुणाब्धिः
श्रीमच्चिद्रूपवेत्ता विमलतरसुवाक् दिव्यमूर्तिः सुकीर्तिः।
साक्षाच्छ्रीशारदायाः गच्छपतिगरिमा भूपवन्द्यो गुणज्ञः
पायाद्भट्टारकोऽसौ सकलसुखकरो रामकीर्तिर्गणेन्द्रः॥ ४६॥

शास्त्राभ्यासनिबन्धनादिषु पटुः रामादिकीर्तिस्तत-
स्ततपट्टे यशकीर्तिनाम सततं विभ्राजते धर्म्मभाक्।
ध्यानाभ्यासकरः सुनिर्मलमनास्तर्कादिकाव्यामृतः
भव्यानां प्रतिबोधनार्थनिपुणः स र्वकलायां रतः॥ ४७॥

तत्पट्टपङ्कज-विकाशनभानुमूर्ति-
र्विद्याविभूषितसमन्वितबोधचन्द्रः।
स्याद्वादशास्त्र-परितोषितसर्वभूपो
भट्टारकः समभव**द्यशपूर्वकीर्तिः**॥ ४८॥

तत्पट्टवारिज-विकाशनतिग्मरश्मिः
पापानबोधतिमिर-क्षय-तिग्मरश्मिः
पायात्सुभव्यभर-पद्मसुतिग्मरश्मिः
श्रीपद्मनन्दिमुनिपो जिततिग्मरश्मिः॥ ४९॥

नानाऽनेकान्तनीत्या जितकुमतशठो विश्वतत्त्वैकवेत्ता
शुद्धात्मध्यानलीनो विगतकलिकलो राजसेव्यक्रमाब्जः।
शास्त्राब्धिपोतप्रख्यो विमलगुणनिधी रामकीर्तेः सुपट्टे
पायाद्वः श्रीप्रसिद्ध्यै जगति यतिपतिः **पद्मनन्दी** गणीशः॥ ५०॥

तत्पट्ट-पद्मविकचीकरणैक-मित्रः
सद्बोधबोधितनृपो विलसच्चरित्रः।
भट्टारको भुवि विभात्यवबोधनेत्रः
देवेन्द्रकीर्तिरतिशुद्धमतिः पवित्रः॥ ५१॥

श्रीसर्वज्ञोक्तशास्त्राऽध्ययनपटुमतिः सर्वथैकान्तभिन्नः
चिद्रूपो भाति वेत्ता क्षितिपतिमहितो मोक्षमार्गस्य नेता।
भव्याब्जोद्बोधभानुः परहितनियतः पद्मनन्दीन्द्रपट्टे
जीयाद्भट्टारकेन्द्रः क्षितितलविदितो देवेन्द्रकीर्तिः॥ ५२॥

तत्पट्ट-नीरज-विकाशन-कर्म-साक्षी
पापान्धकार-विनिवारण-कर्म-साक्षी।
दुर्वादि-दुर्वन-कैरव-कर्म-साक्षी
श्रीक्षेमकीर्तिमुनिपो जितकर्मसाक्षी॥ ५३॥

हेयाहेय-विचारणाङ्कित-मतिर्वादीन्द्र-चूडामणिः
स्फुर्य्याद्विश्वजनीनवृत्तिरनिशं सम्यक्त्वतालङ्कृतः।
सद्वाक्यामृतरञ्जिताखिलनृपो देवेन्द्रकीर्तेः पदे
जीव्याद्वर्षपरः शतं क्षितितले श्रीक्षेमकीर्तिर्गुरुः॥ ५४॥

तत्पट्टकोकनद-मोदन-चित्रभानुः
दुःकर्मदुस्तरसुनाशन-चित्रभानुः।
भव्यालितामरसरंजन-चित्रभानुः
जीयान्नरेन्द्रवरकीर्तिसुचित्रभानुः॥ ५५॥

श्रीमत्स्याद्वाद-शास्त्रावगम-वरमतिः शान्तमूर्त्तिर्मनोज्ञः
दिव्यत्स्वात्मोपलब्धिः प्रहतकलिमलोमोक्षमार्गस्य नेता।
सर्वज्ञाभासवेदालिमकलमदरुत् क्षेमकीर्त्तेः सुपट्टे
सूरिः श्रीमन्नरेन्द्रो जयति पटुगुणः कीर्तिशब्दाभियुक्तः॥ ५६॥

तत्पट्टवारिधिविवर्द्धनपूर्णचन्द्रः
पुष्यायुधेभहरिणाधिपतिर्विर्तेन्द्रः।

सद्‌बोधवारिजविकाशनवासरेन्द्रः
भट्टारको **विजयकीर्त्तिरसौ** मुनीन्द्रः॥ ५७॥

स्याद्वादामृतवर्षणैकजलदो मिथ्यान्धकारांशुमान्
भास्वन्मूर्त्तिनरेन्द्रकीर्त्तिसुसरो पट्टावलीक्ष्माधिपः।
नानाशास्त्रविचारचारुचतुरः सन्मार्गसंवर्त्तको
जीयात् श्रीविजयादिकीर्त्तिरमलो दद्याच्च सन्मङ्गलं॥ ५८॥

तत्पट्ट-पङ्कज-विकाशन-पङ्कजेन्द्रः
स्याद्वाद-सिन्धुवर-वर्द्धन-पूर्णचन्द्रः।
वादीन्द्रकुम्भमदवारणसन्मृगेन्द्रः
भट्टारको जयति निर्मल**नेमिचन्द्रः**॥ ५९॥

नानान्यायविचारचारुचतुरो वादीन्द्र-चूडामणिः
षट्तर्कागमशब्दशास्त्रनिपुणो स्फुर्जद्यशश्चन्द्रमाः।
स्वात्मज्ञानविकाशनैकतरणिः श्रीनेमिचन्द्रो गुरुः
सद्भट्टारकमौलिमण्डनमणिर्जीव्यात्सहस्रं समाः॥ ६०॥

तत्पट्ट-पङ्कज-विकाशन-सूर्य्यरूपः
शास्त्रामृतेन परितोषित-सर्वभूपः।
सच्छास्त्रकैरव-विकाशन-चन्द्रमूर्त्तिः
भट्टारकः समभवत् वर**चन्द्रकीर्त्तिः**॥ ६१॥

श्रीमान्नाभिनरेन्द्रसुनुचरणाम्भोजद्वये भक्तिमान्
नानाशास्त्रकलाकलापकुशलो मान्यः सदा भूभृतां।
नित्यं ध्यानपरोमहाव्रतधरो दाता दयासागरः
ब्रह्मज्ञान-परायणस्समभवत् श्रीचन्द्रकीर्त्तिः प्रभुः॥ ६२॥

पद्मनन्दी गुरुर्जातो बलात्कारगणाग्रणीः
पाषाणघटिता येन वादिता श्रीसरस्वती।
उज्जयन्तगिरौ तेन गच्छः सारस्वतोऽभवत्
अतस्तस्मै मुनीन्द्राय नमः श्रीपद्मनन्दिने॥ ६३॥

('तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य-परम्परा'/ खण्ड ४ / पृ.३९३-३९९ से उद्धृत)। प्रथम शुभचन्द्र का समय विक्रमसंवत् १५३५-१६२० है। (ती.म.आ.प. / खं.३ / पृ.३६५) प्रो० ए० एन० उपाध्ये के अनुसार ये पाण्डवपुराण के भी रचयिता हैं और ई० सन् १५१६-५६ में हुए थे। (प्रवचनसार, Introduction, p.9)।

४

श्रवणबेलगोल-महानवमी मण्डप के एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण नन्दिसंघ की पट्टावली, लेख क्र० ४० (६४), शक सं० १०८५

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघनाशिने।
कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्न-घनभावने॥ १॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धिः
प्रध्वस्ताघप्रमेयप्रचयविषयकैवल्यबोधोरुवेदिः।
शस्तस्यात्कारमुद्रा-शवलित-जनतानन्दनादोरुघोषः
स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्य्यवीचोनिकायः॥ २॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः **श्रीगौतमाद्याः** प्रभविष्णवस्ते।
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ बोधनिधिर्ब्बभूव॥ ३॥

(श्री) भद्रस्सर्व्वतो यो हि **भद्रबाहुरिति** श्रुतः।
श्रुतकेवलिनाथेषु चरमः परमो मुनिः॥ ४॥

चन्द्रप्रकाशोज्ज्वलसान्द्रकीर्तिः **श्रीचन्द्रगुप्तोऽजनि** तस्य शिष्यः।
यस्य प्रभावाद्वनदेवताभिराराधितः स्वस्य गणो मुनीनां॥ ५॥

तस्यान्वये भू-विदिते बभूव यः पद्मनन्दिप्रथमाभिधानः।
श्रीकोण्डकुन्दादिमुनीश्वराख्यस्सत्संयमादुद्गत-चारणर्द्धिः॥ ६॥

अभूदुमास्वाति-मुनीश्वरोऽसावाचार्य्य-शब्दोत्तर-गृद्धपिच्छः।
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्त्थवेदी॥ ७॥

श्रीगृद्ध्रपिच्छमुनिपस्य बलाकपिच्छः
शिष्योऽजनिष्ट-भुवनत्रयवर्त्ति-कीर्तिः।
चारित्र-चञ्चुरखिलावनिपाल-मौलि-
माला-शिलीमुख-विराजित-पादपद्मः॥ ८॥

एवं महाचार्य्यपरम्परायां स्यात्कारमुद्राङ्कितत्त्वदीपः।
भद्रस्समन्ताद्गुणतो गणीश**स्समन्तभद्रो**ऽजनिवादिसिंहः॥ ९॥

ततः॥

यो **देवनन्दि**प्रथमाभिधानो बुद्ध्या महत्या स जिनेन्द्रबुद्धिः।
श्रीपूज्यपादोऽजनि देवताभिर्य्यत्पूजितं पाद-युगं यदीयम् ॥ १०॥

जैनेन्द्रं निजशब्दभोगमतुलं सर्व्वार्थसिद्धिः परा
सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्धकवितां जैनाभिषेकः स्वकः।
छन्दस्सूक्ष्मधियं समाधिशतकस्वास्थ्यं यदीयं विदा-
माख्यातीह से पूज्यपाद-मुनिपः पूज्यो मुनीनां गणौः॥ ११॥

ततश्च॥

(पश्चिममुख)

अजनिष्टाकलङ्कं यज्जिनशासनमादितः।
अकलङ्कं बभौ येन **सोऽकलङ्को** महामतिः॥ १२॥

इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्रीमूलसङ्घे ततो
जाते नन्दिगण-प्रभेदविलसद्देशीगणे विश्रुते।
गोल्लाचार्य्य इति प्रसिद्ध-मुनिपोऽभूद् गोल्लदेशाधिपः
पूर्व्वं केन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः ॥ १३॥

श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिका कायलग्ना तनुत्रं
यस्याभूद्वृष्टि-धारानिशितशर-गणाग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बम्।
चक्रं सद्वृत्तचापाकलित-यतिवरस्याघशूत्रन्विजेतुं
गोल्लाचार्य्यस्य शिष्यस्य जयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः॥ १४॥

तच्छिष्यस्य॥

अविद्धकर्ण्णादिक-**पद्मनन्दिसैद्धान्तिका**ख्योऽजनि यस्य लोके।
कौमारदेव व्रतिता प्रसिद्धिर्जीयात्तु सो ज्ञाननिधिस्सधीरः॥ १५॥

तच्छिष्यः **कुलभूषणा**ख्ययतिपश्चारित्रवारन्निधि-
स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्म्मो महान्।
शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्क्कग्रन्थकारः **प्रभा-**
चन्द्राख्यो मुनिराजपण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः॥ १६॥

तस्य **श्रीकुलभूषणा**ख्यसुमुनेश्शिष्यो विनेयस्तुत-
स्सद्वृत्तः **कुलचन्द्रदेव**मुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः।
तच्छिष्योऽजनि **माघनन्दि**मुनिपः कोल्लापुरे तीर्थकृ-
द्राद्धान्तार्णवपारगोऽचलधृतिश्चारित्रचक्रेश्वरः॥ १७॥

एले माविं बनवब्जदिं तिलिगोलं माणिक्यदिं मण्डना-
वलिताराधिपनिं नभं शुभदमा गिर्प्पन्तिरिर्द्दतुनि-
र्म्मलवीगल् **कुलचन्द्रदेव**चरणाम्भोजातसेवाविनि-
श्चलसैद्धान्तिकमाघनन्दिमुनियिं श्रीकोण्डकुन्दान्वयम्॥ १८॥

हिमवत्कुत्कोल-मुक्ताफल-तरलतरत्तार-हारेन्दुकुन्दो-
पमकीर्तिव्याप्तदिग्मण्डलनवनतभूमण्डलं भव्यपद्मोग-
मरीचीमण्डलं पण्डित-तति-विनतं माघनन्द्याख्यवाचं
यमिराजं वाग्वधूटीनिटिलतटहटन्नूलसद्रत्नप---॥ १९॥

---त मद-रदनिकुलमं भरदिं निर्ब्भेदिसल्के---सरियेनिपं
वरसंयमाब्धिचन्द्रं धरेयोल् --- माघनन्दि-सैद्धान्तेश॥ २०॥

तच्छिष्यस्य॥

अवर गुड्डुगलु सामन्तकेदारनाकरस दानश्रेयांस सामन्त निम्बदेव जगदोर्ब्बगण्ड सामन्तकामदेव॥

(उत्तरमुख)

गुरुसैद्धान्तिकमाघनन्दिमुनिपं श्रीमचमूवल्लभं
भरतं छात्रनपारशास्त्रनिधिगल् श्रीभानुकीर्त्तिप्रभा-
स्फुरितालङ्कृत-देवकीर्ति-मुनिपर्शिश्यर्ज्जगन्मण्डन-
र्द्दोरेये गण्डविमुक्तदेवनिनगिन्नीनामसैद्धान्तिकर्॥ २१॥

क्षीरोदादिव चन्द्रमा मणिरिव प्रख्यातरत्नाकरात्
सिद्धान्तेश्वरमाघनन्दियमिनो जातो जगन्मण्डनः।
चारित्रैकनिधानधामसुविनम्रो दीपवर्ती स्वयं
श्रीमद्गण्डविमुक्तदेवयतिपस्सैद्धान्तचक्रधिपः॥ २२॥

अवर सधर्म्मर्।

आवों वादिकथात्रयप्रवणदोल् विद्वज्जनं मेच्चे वि-
द्यावष्टम्भमनप्पुकेय्दु परवादिक्षोणिभृत्पक्षमं।
देवेन्द्रं कडिवन्ददिं कडिदेले स्याद्वादविद्यास्त्रदिं
त्रैविद्य**श्रुतकीर्त्ति**दिव्यमुनिवोल् विख्यातियाँ तालिददों॥ २३॥

श्रुतकीर्त्ति-त्रैविद्य-
व्रति राघवपाण्डवीयमं विभु (बु) धचम-
त्कृतियेनिसि गत-प्रत्या-
गतदिं पेल्दमलकीर्त्तियं प्रकटिसिदं ॥ २४॥

अवरग्रजरु ॥

यो बौद्धक्षितिभृत्करालकुलिशश्चार्व्वाकमेघान (नि) लो
मीमांसा-मत-वर्त्ति वादि-मदवन्मातङ्गकण्ठीरवः।
स्याद्वादाब्धि-शरत्समुद्गतसुधा-शोचिस्समस्तैस्स्तुत-
स्स श्रीमान्भुवि भासते कनकनन्दि-ख्यात-योगीश्वरः॥ २५॥

वेताली मुकुलीकृताञ्जलिपुटा संसेवते यत्पदे
झोट्टिङ्गः प्रतिहारको निवसति द्वारे च यस्यान्तिके।
येन क्रीडति सन्ततं नुततपोलक्ष्मीर्य्यश(:)श्रीप्रिय-
स्सोऽयं शुम्भति **देवचन्द्र**मुनिपो भट्टारकौघाग्रणीः॥ २६॥

अवर सधर्म्म**र्म्माघनन्दि**-त्रैविद्य-देवरु विद्याचक्रवर्ति **श्रीमद्देवकीर्त्ति**-पण्डितदेवर शिष्यरु **श्रीशुभचन्द्र**त्रैविद्यदेवरुं **गण्डविमुक्त**वादि-**चतुर्म्मख-रामचन्द्र**-त्रैविद्यदेवरुं वादिवज्राङ्कुश-**श्रीमदकलङ्क**त्रैविद्यदेवरुमापरमेश्वरन गुड्डुगलु **माणिक्यभण्डारि मरियाने** दण्डनायकरुं श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारिपिरियदण्डनायकं**भरतिमय्यङ्गलुं** श्रीकरणद हेग्गडे **बूचिमय्यङ्गलुं** जगदकेदानि हेग्गडे कोरय्यनुं॥

अकलङ्कं पितृ वाजि-वंश-तिलक-श्री-यक्षराजं निजा-
म्बिके लोकाम्बिके लोकवन्दिते सुशीलाचारे दैवं दिवी-
शकदम्बस्तुतपादपद्मनरुहं नाथं यदुक्षोणिपा-
लक चूडामणि नारसिङ्गनेनलेन्नोम्पुल्लनोहुल्लपं॥ २७॥

श्रीमन्महाप्रधानं सर्व्वाधिकारि हिरियभण्डारि अभिनवगङ्गदण्डनायक-श्रीहुल्लराजं तम्म गुरुगलप्पश्रीकोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीकोल्लापुरद श्रीरुपनारायणन-बसदिय प्रतिविद्धद श्रीमत्केल्लङ्गेरेय प्रतापपुरवं पुनर्भरणवं माडिसि जिननाथपुरदलु कल्ल दानशालेयं माडिसिद श्रीमन्महामण्डलाचार्य्य**र्द्देवकीर्त्ति**पण्डितदेवर्गे परोक्षविनयवागि निशिदियं माडिसिद अवर शिष्यर्लक्खणन्दि-**माघव-त्रिभुवनदेव**र्महादान-पूजाभिषेक-माडि प्रतिष्ठेयं माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री श्री।

(जैन शिलालेख संग्रह / माणिकचन्द्र / भाग १ से उद्धृत)

नवम अध्याय